(1)

17/10/20

B.A. I Year
Hindi Hons
मध्यकालीन हिन्दी
काव्य
जायसी

डॉ० अरविन्द कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
[illegible] कॉलेज
जहानाबाद

प्रश्न :- प्रस्तुत पंक्तियों की व्याख्या करें

तब आगमन होइ गोरा मिला।
तुइ आगहि लेइ चलु बादला॥
पिता मरै जो साँकरे साथा।
मीचु न देइ पूत के माथा॥
मैं अब आउ भरी औ भूँजी।
का पछिताव आउ जौं पूजी॥
बहुतन्ह मारि मरौं जौं जूझी।
तुम जिनि रोवहु तौ मन बूझी॥

उत्तर :- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक मध्यकालीन हिन्दी काव्य के से जायसी के पद्मावत से संकलित गोरा-बादल युद्ध खंड से ली गई है।

प्रस्तुत पंक्तियों में गोरा द्वारा बादल के वीरता के साथ संवाद को रेखांकित किया गया है। रानी को छुड़ाकर चित्तौड़ ले चलने प्रसंग वीरता का है। गोरा और बादल दोनों लड़ने को तत्पर हैं। मरे हुये हैं रतन ... गोरा अपने पुत्र बादल से कहता है कि मैं सुल्तान की सेना को रोककर युद्ध करूँगा तथा तू राजा को लेकर चित्तौड़ की यात्रा करो। क्रमशः :-

Behind every able man, there are always other able men.

B.A. I Part 10/10/20
Hindi Hons डॉ० अवधेश कुमार

पिता इन समाचारों से जाता तो कोई बात नहीं। पिता के समझाने पुत्र को नहीं समझना चाहिए। मेरे समझाने (कहने) मृत्यु सुधार नहीं है। मेरी मृत्यु होगी तो कोई हानि नहीं है मेरी आयु पूरी हो गई है। मैंने सभी प्रकार से अपनी आयु का उपयोग कर लिया है। मेरी मृत्यु होगी तो पछताने वाली कोई बात नहीं है। तुम अभी बहुत ही कम उम्र के हो। तुमने अभी अपने जीवन का पूरा उपयोग नहीं किया है इसलिए तुम हो जाना कि लेकर चिन्तित वाले जाओगे। मैं बादलों को मारकर आगत में यह गीत में सुनते हैं तो चिन्ता की कोई बात नहीं है। मेरी मृत्यु अगर होती है तो इसमें नहीं जाना चाहिए। क्योंकि मेरी मृत्यु युद्धों में बादलों को मार कर होगी यह गौरव की बात है।

(1) गद्यांश — प्रस्तुत पंक्तियाँ संवाद शैली में है।

(2) प्रस्तुत पंक्तियों में जोशपूर्ण भावों का पालन करता हुआ दिखलाई पड़ता है।

(3) पिता - पुत्र दोनों संवादों में भारत लोगों के लिए प्रेरणादायक हैं।

(4) प्रस्तुत पंक्तियाँ वीर रस से युक्त हैं।

(5) यहाँ जीवन गाथा की महानता है।

(6) यहाँ भड़कती हुई शैली का प्रयोग किया गया है।

क्रमशः।